परमा एकादशी कथा — चयनित पूर्ण पुनर्कथन

Parama Ekadashi Katha — Complete Selected Retelling

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj complete Parama account, physical scans 477–481. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 complete comparison, physical scans 584–589; Controlling scan metadata — CC0 digitisation and edition identity; Controlling Parama opening image.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj Sanskrit print, Adhik Krishna Ekadashi account 1–67, physical scans 477–481, not a transcription of the original text.

परमा और सुमेधा-पवित्रा का घर

KATHA 1–14

युधिष्ठिर कृष्ण से अतिरिक्त मास की कृष्ण एकादशी का नाम और विधि पूछते हैं। कृष्ण उसका नाम परमा कहते हैं और स्त्री-पुरुष दोनों के लिए भुक्ति-मुक्ति का धार्मिक फल बताते हैं। पहले कही विधि और नाम-स्मरण सहित देव-पूजा का उल्लेख करके वे कांपिल्य में घटित कथा सुनाते हैं, जो उन्होंने मुनियों के सामने सुनी थी।

सुमेधा नाम के धार्मिक ब्राह्मण और उनकी पत्नी पवित्रा अभाव में रहते थे। स्रोत उनके धन-धान्य न होने को पूर्व कर्म से जोड़ता है; यह उसका धार्मिक कथन है, गरीबी से किसी की गलती सिद्ध नहीं होती। लोगों से माँगने पर भी सुमेधा को पर्याप्त सहायता नहीं मिलती थी। भोजन, वस्त्र और आभूषण का अभाव था। पवित्रा अतिथि को खिलाकर स्वयं भूखी रहती थीं, फिर भी पति से शिकायत नहीं करती थीं। कथा उनके धैर्य का वर्णन करती है; अतिथि या परिवार के लिए खुद को भूखा रखना यहाँ आदर्श निर्देश नहीं।

पत्नी की क्षीण देह देखकर सुमेधा दुखी होते हैं। वे पूछते हैं कि धन न मिलने पर कहाँ जाएँ और क्या करें। घर के काम पूरे करने के लिए दूसरे देश में आजीविका खोजने की अनुमति माँगते हैं। वे कहते हैं कि प्रयास के बिना कार्य सफल नहीं होता और समझदार लोग शुभ उद्यम की प्रशंसा करते हैं। उनका यह प्रयास वाला पक्ष भी कथा में रखा गया है, केवल चमत्कार की प्रतीक्षा नहीं।

Yudhishthira asks Krishna about the additional month's dark-fortnight Ekadashi and its observance. Naming Parama, Krishna praises enjoyment and liberation for both women and men. Referring to the preceding instructions, devotion and worship through the Lord's name, he relates an account from Kampilya that he heard before sages.

The religious Brahmin Sumedha and his wife Pavitra live in deprivation. The source associates their lack of wealth and grain with earlier karma; that is its religious claim, not proof that poverty is someone's fault. Sumedha receives insufficient help despite asking many people. Food, clothing and ornaments are lacking. Pavitra feeds guests while remaining hungry and does not complain to her husband. Her endurance is described in the story, not prescribed as self-starvation for guests or family.

Seeing his wife's wasting body, Sumedha is distressed. He asks what to do and where to go without money. He requests permission to seek a livelihood elsewhere to support the household. He argues that work cannot succeed without effort and wise people commend constructive enterprise. This emphasis on effort remains part of the account, rather than merely waiting for a miracle.

पवित्रा का उत्तर और ऋषि का आगमन

KATHA 15–28

पवित्रा विनम्रता से अपनी बात कहती हैं। वे पति को ज्ञानी मानते हुए हित की बात सुनने को कहती हैं, भले वह अप्रिय हो। उनके तर्क में पूर्व दान और भाग्य से मिलने वाली विद्या, धन और भूमि का उल्लेख है। वे कहती हैं कि पहले न दिया हो तो दूर जाने या स्वर्ण-पर्वत तक पहुँचने से भी कुछ नहीं मिलेगा। यह पात्र का भाग्य और दान संबंधी विश्वास है; पुनर्कथन इसे रोज़गार न खोजने की सलाह या गरीब व्यक्ति पर आरोप नहीं बनाता।

वे साथ रहने का आग्रह करती हैं। पति से अलग हुई स्त्री को परिवार से आदर न मिलने और दुर्भाग्यवती कहे जाने का सामाजिक भय भी बताती हैं। वे सुमेधा को यहीं ठहरने को कहती हैं और आशा करती हैं कि सहायता मिल जाएगी। यह पुराने समाज की चिंता है, अकेली या अलग रह रही स्त्री के अपमान का समर्थन नहीं। सुमेधा उनकी बात सुनकर रुक जाते हैं।

इसी समय कौंडिन्य ऋषि आते हैं। दंपती उठकर प्रणाम करते हैं, आसन देते हैं, पूजा करके उन्हें भोजन कराते हैं। सुमेधा उनके आने को सौभाग्य मानते हैं। छपा वर्णन इसी स्वागत में आंगिरस नाम भी रखता है, जबकि आगमन और आगे का उपदेश कौंडिन्य का है। यह नाम-अंतर खुला रखा गया है; कोई दूसरा गुरु या अलग प्रसंग नहीं जोड़ा गया।

Pavitra speaks respectfully. Acknowledging her husband's learning, she asks him to hear beneficial advice even if unwelcome. Her argument associates knowledge, wealth and land with former giving and destiny. She says that without earlier gifts nothing will be received even by travelling far or reaching a mountain of gold. This is the character's belief about fate and charity, not advice against seeking work or an accusation against poor people.

She asks that they remain together. She describes fear that a woman separated from her husband will receive no honour from family and be called unfortunate. Asking Sumedha to stay, she hopes help will come locally. This reflects historical social anxiety, not approval of insulting women who live alone or apart. He listens and remains.

Sage Kaundinya arrives. The couple rise, bow, offer a seat, honour him and provide food. Sumedha regards the visit as fortunate. The printed welcome also uses the name Angiras, although the arrival and later teaching name Kaundinya. This name variation remains disclosed; no second teacher or additional episode is invented.

परमा का उपदेश और पंचरात्र की भूमिका

KATHA 29–41

पवित्रा ऋषि से अभाव दूर करने का उपाय पूछती हैं। वे पति के दूसरे नगर जाकर धन माँगने की इच्छा और अपने तर्क से उन्हें रोकने की बात बताती हैं। ऋषि के आने पर वे आशा व्यक्त करती हैं और व्रत, तीर्थ या तप जैसे मार्ग के बारे में पूछती हैं। कथा के पात्र की आशा यहाँ आय या कर्ज़ दूर होने का भरोसा नहीं।

ऋषि विचार करके अतिरिक्त मास की कृष्ण पक्ष वाली परमा को विष्णु की तिथि कहते हैं। वे भुक्ति-मुक्ति, धन-धान्य, गीत-वाद्य और जागरण सहित पालन की धार्मिक प्रशंसा करते हैं। कुबेर द्वारा यह व्रत करने और रुद्र से धन का अधिपति बनने का कथन आता है। हरिश्चंद्र द्वारा बेचे गए पुत्र और खोई पत्नी तथा राज्य फिर पाने का संक्षिप्त उदाहरण भी है। यह अलग पूरी हरिश्चंद्र कथा नहीं; न परिवार की बिक्री का समर्थन और न पुनर्मिलन की गारंटी।

वे पवित्रा को व्रत का प्रसंग बताते हैं और फिर पंचरात्र व्रत की चर्चा शुरू करते हैं। पहले की पूरी विधि का संदर्भ रखा गया है, लेकिन पद्मिनी की कथा को परमा में मिलाया नहीं गया। यहाँ किसी पर जागरण, दान या पाँच दिनों की तपस्या का दबाव नहीं।

Pavitra asks the sage how their deprivation might end. She explains her husband's plan to ask for money in another city and how her argument persuaded him to stay. Welcoming the sage with hope, she asks about a vow, sacred place or austerity. Her hope is not a promise here of income or debt relief.

After reflection the sage identifies Parama, in the additional month's dark fortnight, as Vishnu's sacred day. He praises enjoyment, liberation, wealth and grain, singing, music and vigil as religious benefits and observances. He mentions Kubera observing it and receiving lordship over wealth from Rudra. Another brief example recalls Harishchandra, his sold son, and recovery of his wife and kingdom. This is not a separate complete Harishchandra account, approval of selling family members or a reunion guarantee.

He explains the vow and begins discussing the Pancharatra observance. The earlier instructions remain a source cross-reference; the Padmini narrative is not blended into Parama. No vigil, donation or five-day austerity is imposed here.

पाँच दिनों की चर्चा और सहायता

KATHA 42–56

ऋषि परमा की सुबह से पाँच दिनों के संयम का प्रसंग कहते हैं। स्रोत निराहार रहने और एक बार भोजन करने के अलग विकल्पों को धार्मिक फल से जोड़ता है। स्नान, भोजन कराने, जल-भरा कलश, तिल और घृत-पात्र देने तथा ब्रह्मचर्य की चर्चा भी आती है। पितृ-माता-पत्नी के साथ विष्णु के लोक, स्वर्ग और सूर्यलोक जैसे फल कहे जाते हैं; संख्या और पूरे जगत को भोजन कराने की उपमाएँ भी हैं। ये पंचरात्र की स्रोतगत प्रशंसाएँ हैं, पाँच दिनों के उपवास की सलाह, अनिवार्य वस्तु-सूची या परलोक का सत्यापन नहीं।

कथा कहती है कि पवित्रा और सुमेधा श्रद्धा से कौंडिन्य द्वारा बताई आराधना करते हैं। पंचरात्र पूरा होने पर दोनों राजभवन से आते राजकुमार को देखते हैं। राजकुमार नया घर और उपयोगी वस्तुएँ देकर उन्हें बसाते हैं, और सुमेधा को आजीविका देने वाला गाँव देते हैं। स्रोत इसे दैवी प्रेरणा से हुआ दान बताता है और राजा की प्रसन्नता का उल्लेख करके उनके लौटने की बात कहता है।

अंत में दंपती के सुख से रहने और विष्णु के लोक जाने की धार्मिक कथा आती है। सहायता में घर और आजीविका का दान वास्तविक कथानक है; मंत्र से स्वतः धन बनने का नया प्रसंग नहीं जोड़ा गया। उपवास करने से घर, नौकरी या धन मिलने का कोई वादा नहीं किया जाता।

The sage describes five days of restraint beginning on Parama's morning. The source distinguishes abstention from food and eating once, associating them with religious benefits. Bathing, feeding others, gifts of a water-filled vessel, sesame and ghee, and celibacy also appear. Benefits include Vishnu's abode with father, mother and wife, heaven and the sun's realm, with numerical praise and feeding-the-whole-world comparisons. These are the source's Pancharatra praises, not advice to fast for five days, a compulsory shopping list or verification of an afterlife.

Pavitra and Sumedha undertake the devotion described by Kaundinya. After the Pancharatra ends they see a prince coming from the palace. He settles them in a new house with useful goods and grants Sumedha a village providing a livelihood. The source describes divine prompting, the ruler's pleasure and his return.

The ending tells of the couple living happily and finally reaching Vishnu's abode. Assistance through a house and livelihood is the actual plot; no added scene of a mantra spontaneously producing money appears. Fasting is not promised to bring a house, job or wealth.

कृष्ण की अंतिम प्रशंसा और समापन

KATHA 57–67

कृष्ण कहते हैं कि पंचरात्र की धार्मिक प्रशंसा पूरी कहना संभव नहीं, फिर भी कुछ फल बताते हैं। पुष्कर जैसे तीर्थ, गंगा जैसी नदियों में स्नान, धेनु आदि दान, गया-श्राद्ध से पितरों की संतुष्टि और अन्य व्रतों के फल से तुलना आती है। ब्राह्मण, गाय और इंद्र की श्रेणीगत उपमाओं से अतिरिक्त मास को श्रेष्ठ कहा गया है। ये पुराने पाठ की धार्मिक और सामाजिक उपमाएँ हैं, जाति की श्रेष्ठता, पशु-दान की अनिवार्यता या किसी रिश्तेदार की परलोक-स्थिति का निर्णय नहीं।

पद्मिनी, परमा और पंचरात्र का साथ में स्मरण आता है। स्रोत आगे मानव जन्म की दुर्लभता, अनेक योनियों और पालन न करने पर कठोर निंदा कहता है। यह ऐतिहासिक प्रशंसा-भाषा है; यहाँ उपवास न करने वाले को दोषी नहीं कहा जाता। स्वास्थ्य, काम या अपनी इच्छा के कारण व्रत न करना किसी की श्रद्धा या गरिमा कम नहीं करता।

कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि अतिरिक्त मास की परमा का पूरा प्रसंग कह दिया गया है। अंतिम छंद आनंद और दिव्य लोक की धार्मिक प्रशंसा करता है। परमा माहात्म्य का अपना समापन इसके बाद है। अगला अलग द्वादशी-व्रत खंड इस कथा में नहीं लिया गया। यहाँ कथा की शुरुआत, दंपती का संवाद, ऋषि की शिक्षा, सहायता और अंतिम फल-वचन सहित चयनित पूरा प्रसंग समाप्त होता है।

Krishna says Pancharatra's religious benefits cannot be fully expressed but mentions some: comparisons with bathing at Pushkara and in Ganga, gifts including cows, satisfying ancestors through Gaya shraddha and other vows. Comparisons involving Brahmins, cows and Indra praise the additional month. These are historical religious and social comparisons, not endorsement of caste superiority, compulsory animal gifts or judgments about a relative's afterlife.

Padmini, Parama and Pancharatra are recalled together. The source discusses the rarity of human birth, many forms of rebirth and harsh censure of non-observance. This historical praise language is not used here to blame people who do not fast. Health, work or personal choice do not diminish devotion or dignity.

Krishna tells Yudhishthira that the whole additional-month Parama account has been related. The last stanza praises happiness and a divine abode. Its own Parama-mahatmya colophon follows. The subsequent separately headed Dwadashi-vow section is excluded. The selected whole account ends here, including its opening, the couple's dialogue, the sage's teaching, assistance and concluding religious praise.